पानी बचाओ आंदोलन



# बचाइए बूंद-बूंद पानी

ओ·बी·सी·

# इनसे पूछिए

# पानी का मोल




जो कोसों दूर
पैदल चलकर
पानी लाती हैं
और अपनी
गृहस्थी चलाती हैं

चांदी-सोना और गहने
इनके लिए नहीं कीमती

## सिर्फ पानी है अनमोल !

ओ·बी·सी·

**ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स**
(भारत सरकार का उपक्रम)

*ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स द्वारा जनहित में प्रसारित*

# आपकी बात...

पानी बचाओ आंदोलन
दैनिक भास्कर

ब्रह्माण्ड के किसी ग्रह पर जीवन तलाश करने के लिए हमारे विज्ञानी सबसे पहले ढूंढ़ते हैं, चट्टान में जमी बर्फ या मिट्टी में नमी। जानते हैं, क्यों?

**इसलिए** कि जहां पानी होगा, वहीं जीवन होगा। जहां पानी नहीं होगा, वहां न वनस्पति ही होगी और न ही जीवन की कोई संभावना। हम 'हैं' क्योंकि हमारी धरती पर पानी है। जब पानी नहीं रहेगा तो हम भी नहीं बचेंगे, लेकिन इतनी दूर की बात कौन सोचता है? शहरों में नल व बोरिंग, कस्बों में कुएं व हैंडपंप, गांवों में तालाब और नाड़ी, जब तक इनमें पानी है हम बेफ्रिक होकर उसका उपयोग करते हैं। घरों में, दफ्तरों में, बाग-बगीचों में, लॉन में, गैरिज में पानी को बेहिसाब काम में लेते हैं जैसे इसका कोई मोल है ही नहीं।

**दरअसल** पानी को हम अपने हिस्से में आई जायदाद मानते हैं जबकि वह है समूचे समाज की संपदा। पानी पर हक है पेड़-पौधों का, पशु-पक्षियों का और गरीब-अमीर सबका, लेकिन हमारा रवैया होता है दूसरे की प्यास की कीमत पर अपना आनंद भोगने वाला।

**जरा** मरुस्थल की ढाणियों की ओर झांक कर देखिए कि कितने मील चलकर औरतें पानी लाती हैं, जरा सूखती फसल के आगे लाचार किसान की आंख में झांक कर

पानी बचाने के लिए अलग से कुछ नहीं करना है-सिर्फ चौकस रहना है।

उसका पानी नापिए, जरा अपने ही शहर की किल्लत वाली बस्तियों में पानी की मारा-मारी देखिए और महसूस कीजिए कि पानी कितना कीमती है। वहां बूंद-बूंद अनमोल है और हम यहां लापरवाही, मौज-शौक या अपने शगल के पीछे हर रोज कितना सारा पानी बर्बाद कर देते हैं।

**अक्सर** हम पानी बचाने की इच्छा रखते हुए भी विशेष कुछ कर नहीं पाते। शायद इसलिए कि पानी बचाने के तरीकों के बारे में हम ज्यादा कुछ नहीं जानते। लेकिन जरा-सा ध्यान दें, तो आप हर रोज पग-पग पर पानी बचा सकते हैं। ऐसे ही तौर-तरीकों को आप तक पहुंचाने के लिए प्रस्तुत है यह पुस्तिका। राजस्थान, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में दैनिक भास्कर के एक करोड़ से ज्यादा अपने पाठकों को इस पुस्तिका के जरिये हम बता रहे हैं बूंद-बूंद पानी बचाने के आसान व सहज तरीके।

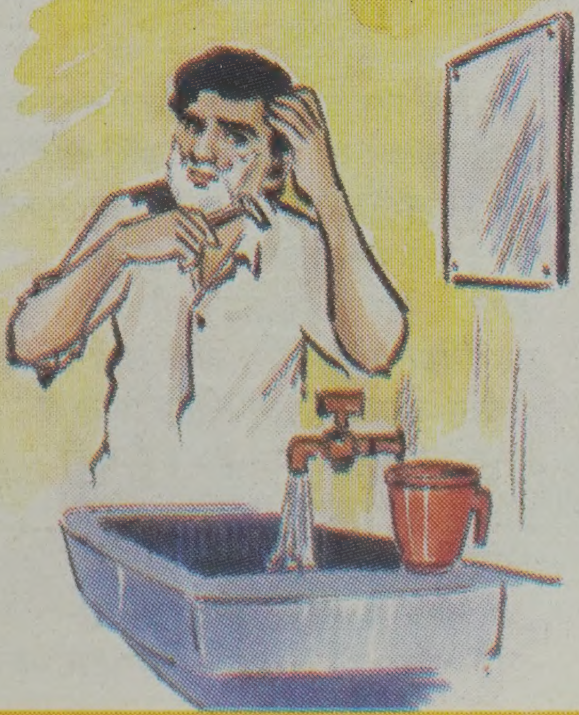
**आशा** है आप आज से ही इन तरीकों को अमल में लाना शुरू करेंगे, ताकि भीषण जल संकट की चपेट में आए हमारे प्रदेशों में जितना भी पानी उपलब्ध है वह ज्यादा समय तक, ज्यादा लोगों को उपलब्ध हो सके और आने वाले कल के लिए पानी को संग्रहित करने की हम ऐसी तैयारी कर सकें कि बरसने वाली पानी की हर बूंद धरती के ऊपर या भीतर जमा की जा सके ताकि वक्त-जरूरत काम आए। हम अकाल को अंगूठा दिखा सकें और उठा सकें हरे-भरे सर-सब्ज संसार में रहने का आनंद।

**– भास्कर परिवार**



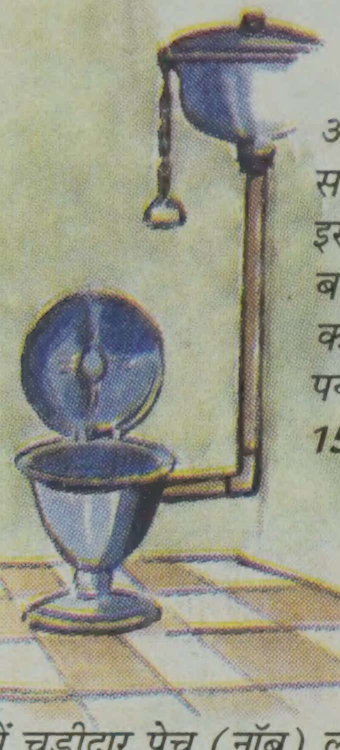
**अक्सर** देखने में आता है कि लोग वाश बेसिन का नल खोलकर मंजन करते हैं। जितनी देर उनका हाथ दांतों को मलने में या ब्रश करने में चलता है उतनी ही देर नल खुला रहता है, जिससे एक बार में करीब **दस** लीटर पानी तो बह ही जाता है। यदि व्यक्ति गिलास या मग में पानी भरकर दांत साफ करे तो **एक** लीटर पानी से काम चल सकता है और हम बचा सकते हैं प्रति व्यक्ति प्रतिदिन **आठ-नौ** लीटर पानी।

**इसी** तरह व्यक्ति जब शेविंग करता है तो अक्सर नल खुला रखता है। खुले नल में लगभग **दस** लीटर पानी बह जाता है यदि वह मग में पानी लेकर शेव बनाए तो **एक** लीटर पानी से ही काम चल सकता है। पानी की यह बर्बादी हम हर रोज करते हैं पर शायद हमें इसका ध्यान नहीं।





जिस हवा में सांस लेते हैं, उसके अलावा पानी जिंदगी का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।



**शौच** के बाद व्यक्ति फ्लश का उपयोग कर पानी की जबर्दस्त बर्बादी करते हैं। पहले तो चेन पुल वाला सिस्टम चलता था जो अभी भी कई जगहों, खासकर सरकारी इमारतों में लगा हुआ है। इसमें भी **25** लीटर वाली पुरानी टंकी बरकरार है जबकि एक बार फ्लश करने के लिए **8-10** लीटर पानी पर्याप्त होता है। आजकल बाजार में **15** व **10** लीटर वाली टंकियों के फ्लश सिस्टम आ गए हैं। इनसे पानी की बचत होने लगी है। हमें चाहिए कि जहां चेन पुलिंग वाला सिस्टम है वहां तो पाइप लाइन में चूड़ीदार पेच (नॉब) लगाकर जरूरत जितना पानी खोलने की व्यवस्था करें। चाहें तो बाल्टी-लोटे का उपयोग करके भी फ्लश कर सकते हैं। इससे पानी की काफी बचत होगी। सीट का डिजाइन भी अब **75** डिग्री कोण वाला आने लगा है, जिसमें मात्र **एक-दो** लीटर पानी से ही काम चल सकता है। हमें बड़ी टंकियों को बदलकर छोटी टंकियां लगा लेनी चाहिए, ताकि हर बार **20** लीटर पानी की जगह **8-10** लीटर पानी ही फ्लश के लिए इस्तेमाल हो।





**नहाना** सिर्फ साफ-सफाई के लिए ही नहीं होता। इससे थकान मिटती है, आनंद की अनुभूति होती है और आदमी एकदम तरोताजा हो जाता है। इसीलिए कई लोग बाथरूम बनाने में ड्राइंग रूम जितना पैसा खर्च करते हैं, लेकिन ये टब और फव्वारे का बाथ। अकाल पड़ा हो तो यह विलासिता है। लोग राशन की लाइन जैसे लगकर **एक-एक, दो-दो** बाल्टी पानी लाएं या दो-तीन दिन में एक बार नल आए तो आप एक बाल्टी पानी से ही नहाने का प्रयास कीजिए। बाल्टी-मग से नहाने में **12-15** लीटर पानी से काम चल जाता है, जबकि फव्वारे या टब से स्नान में खर्च होता है **50** लीटर या उससे भी ज्यादा पानी। पुराने लोग तो अपने अंत: वस्त्र (अंडर गारमेंट) नहाने से पहले खोलकर जमीन पर डाल देते थे, ताकि वे नहाने में काम लिए गए पानी से भीग जाएं और बाद में उन्हें साबुन लगाकर धो लिया जाए। इससे कपड़े भिगोने में लगने वाला पानी तो बच ही जाता है। नहाने के काम में लिया गया पानी लॉन में या अन्यत्र जहां संभव हो काम में ले लेना चाहिए।





भूलिये शावर और बाथटब, इस्तेमाल कीजिए बाल्टी और मग।

**बड़े** घरों में ड्राइवर बड़े आराम से कार धोते हैं, वह भी लगभग हर रोज। बोरिंग या पंप चलाया और पाइप से गाड़ी को नहलाना शुरू। चाहे गाड़ी गंदी हो या न हो, चाहे सादे या गीले कपड़े से पोंछने से ही वह चमक सकती हो पर हाथ की मेहनत की जगह ये काम में लेते हैं पानी की धार का प्रवाह। इससे एक बार में 50 लीटर से भी ज्यादा पानी खर्च होता है। यदि गीले कपड़े से पोंछे तो एक बाल्टी यानी कि मात्र 10-12 लीटर पानी से ही काम चल सकता है। ड्राइवर की ओर से आंखें न मूंदिए। उसे सादे या गीले कपड़े के प्रयोग की हिदायत दीजिए और पानी बचाइए।





पानी बचाओ आंदोलन
दैनिक भास्कर

**घरों** में फूल वाले पौधों के साथ-साथ लॉन भी होते हैं। लॉन की घास का आनंद लेने के लिए व्यक्ति घास को पौधों से अधिक संभालता है, जिसमें काफी पानी लगता है। अकाल की स्थिति के समय घरों में लॉन के बजाय लोगों को केवल फूलदार पौधों का ही आनंद उठाना चाहिए या ऐसे पौधे लगाने चाहिए जिन्हें पानी की जरूरत कम होती है। वैसे घास को भी रोज पानी देना जरूरी नहीं होता, दो दिन में एक बार पानी देने से भी लॉन हरा-भरा रह सकता है। घरों में सब्जी, दाल, चावल आदि को धोने में जो पानी इस्तेमाल होता है उसे हम इकट्ठा करके लॉन में डाल दें तो पानी की काफी बचत होगी और यह पानी अंशतया जमीन में वापस चला जाएगा। जो लोग घर के बाहर की कच्ची जमीन पर पानी डालते हैं ताकि मिट्टी न उड़े, उन्हें भी इसे बंद करना चाहिए। चाहें तो उस जमीन को सीमेंट से पक्का ही करा लें, ताकि मिट्टी उड़कर न आए, लेकिन रोज-रोज पानी की बर्बादी न करें।





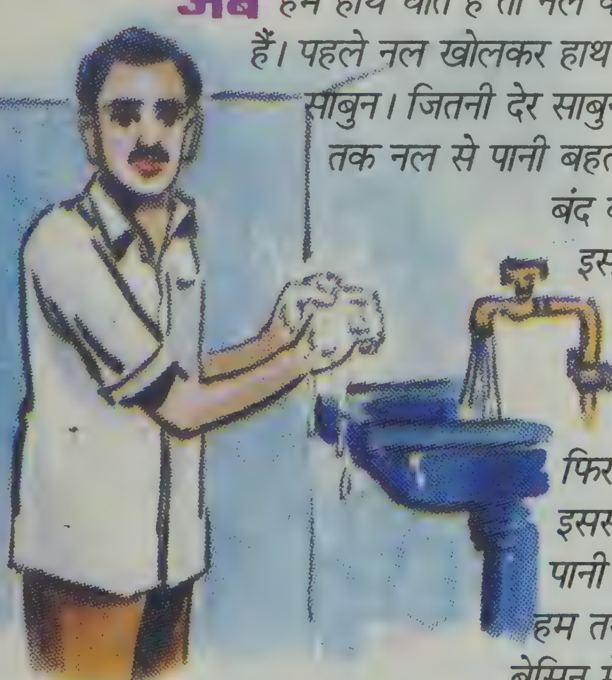
चावल, दाल धोने के बाद बचा पानी फेंके नहीं, लॉन में पौधों को दें।

**पुरानी** परंपरा रही है लोटे या गिलास में पानी भरकर बिना होठों से लगाए ऊपर से पीने की। इससे बार-बार गिलास धोना नहीं पड़ता, लेकिन बदलते समय के साथ यह आदत विलुप्त होती जा रही है। आप गिलास में एक बार में उतना ही पानी लें जितनी आपको प्यास है। अक्सर हम थोड़ी-सी प्यास में भी



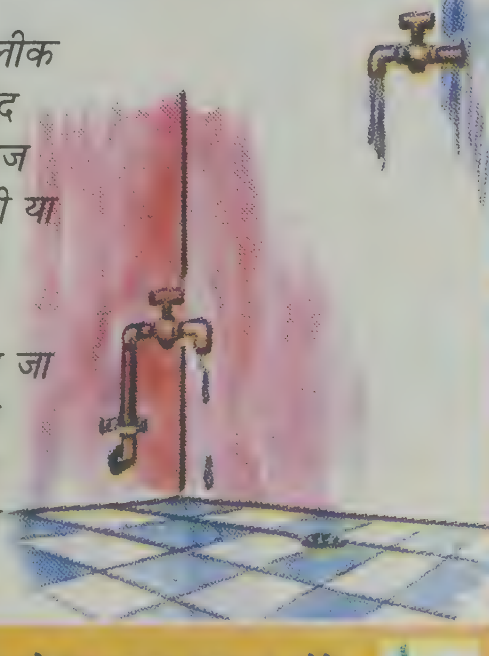
पूरा गिलास भरकर पानी लेते हैं और काफी पानी यूं ही झूठा छोड़ देते हैं। इस बर्बादी को रोका जा सकता है। छोटे गिलास काम में लें और ज्यादा प्यास होने पर दुबारा भर लें। मेहमान गिलासों में पानी छोड़ जाएं तो उस पानी को नाली में बहाने के बजाय पेड़-पौधों में डालें। प्याऊ या हैंडपंप पर ओक से पानी पीने में भी बहुत-सा पानी व्यर्थ चला जाता है। प्याऊ पर तो लोटा या गिलास रखकर इस बर्बादी को रोका जा सकता है। विवाह समारोहों या अन्य समारोहों में लोग मिनरल वाटर से गिलास भरते हैं और चंद बूंदों से हाथ धोकर या थोड़े से घूंट हलक में उतार कर पानी से भरा गिलास फेंक देते है। सादे पानी या मिनरल वाटर की बर्बादी पर किसी का ध्यान नहीं जाता। वहां हाथ धोने की अलग व्यवस्था जैसे पानी की मितव्ययता के कई उपाय किए जा सकते हैं।





**जब** हम हाथ धोते हैं तो नल को काफी देर तक खुला रखते हैं। पहले नल खोलकर हाथ गीले करते हैं, फिर लगाते हैं, साबुन। जितनी देर साबुन मलते रहते हैं उतने समय तक नल से पानी बहता रहता है, क्योंकि हम उसे बंद करने की जहमत नहीं उठाते। इस तरह एक व्यक्ति एक बार में करीब सात लीटर पानी बर्बाद करता है। बेहतर होगा कि जब साबुन लग जाए तब फिर से नल खोलें व हाथ धो लें। इससे केवल आधा से एक लीटर पानी में काम चल जाएगा। यदि हम तरल साबुन काम में लें या वाश बेसिन में नल का बटन हाथ के स्थान पर पैर पर दे दें तो यह ज्यादा सुविधाजनक हो सकता है। इससे आप उतनी देर के लिए नल चला सकते हैं जितनी देर हाथ धोने के लिए पानी चाहिए।

**घरों** में अक्सर नल या पाइप लाइन के लीक होने शिकायत होती रहती है। पानी बूंद-बूंद टपकता है और हम इसे इसलिए नजरअंदाज कर देते हैं कि इससे टंकी खाली नहीं होती या पानी का तात्कालिक संकट पैदा नहीं होता, लेकिन पानी बेकार बहता तो है। इन पर थोड़ा-सा ध्यान देने से काफी पानी बचाया जा सकता है। याद रखिए, एक बूंद पानी प्रति सैकंड की लीकेज से दिनभर में 17 लीटर पानी बेकार चला जाता है, यानी कि उतना पानी जितने पानी से आप नहा सकते हैं।



**भोजन** करते समय कई बार एक अकेला व्यक्ति भी अलग-अलग प्लेटें, कटोरियां व चम्मच इस्तेमाल करता है। खाना सजाने और परोसने में अलग से बर्तन काम में लिए जाते हैं। इन सबको धोने में काफी पानी लग जाता है। हाथ साफ करने के लिए कपड़े का नेपकिन काम में लें तो वह भी धुलाई के लिए पानी मांगता है। यदि हम कपड़े की जगह कागज का नेपकिन काम में लें, कटोरीनुमा डिजाइन वाली थाली काम में लें। हर चीज के लिए अलग चम्मच न वापरें, एक व्यक्ति एक ही चम्मच से काम चला ले तो कम बर्तन काम में आएंगे और उन्हें धोने में पानी भी कम लगेगा। परिवार का हर सदस्य यदि इस तरह पानी बचाए तो हर रोज काफी बचत की जा सकती है। बात छोटी-सी है पर हर रोज व्यवहार में लाएं तो बचत काफी बड़ी हो सकती है।





नेपकिन या तो कागज के हों या फिर छोटे-छोटे हों, पानी बचेगा।



**रसोई** के सिंक में धुलने के लिए बर्तन रखे हैं। आप नल चालू करती हैं और एक-एक बर्तन को पाउडर या टिकिया लगाकर साबुन से साफ करते हुए नल के नीचे रखकर धोती हैं फिर उठाकर सिंक के बाहर रख देती हैं। इस दौरान आप नल बंद नहीं करतीं। जब बर्तन पर साबुन लगा रही होती हैं, तब भी नल चलता रहता है और पानी तब भी बहता रहता है जब आप बर्तन साफ करके उसे सिंक के बाहर पत्थर पर रख रही होती हैं। इस तरह एक परिवार में लगभग सौ लीटर पानी प्रतिदिन यूं ही व्यर्थ चला जाता है। यदि बड़े भगौने या बाल्टी में पानी लेकर बर्तन उसमें डुबोकर साफ करें या मग से पानी निकालकर बर्तन साफ करें तो काफी पानी बचाया जा सकता है। पुराने समय में मिट्टी व राख का प्रयोग होने से पानी की काफी बचत हो जाती थी, लेकिन बदलते समय के साथ-साथ छोटे-छोटे गांवों में भी महिलाओं ने पाउडर व साबुन की टिकियाओं का उपयोग शुरू कर दिया है फिर भी थोड़ी-सी सतर्कता से काफी पानी बचाया जा सकता है।



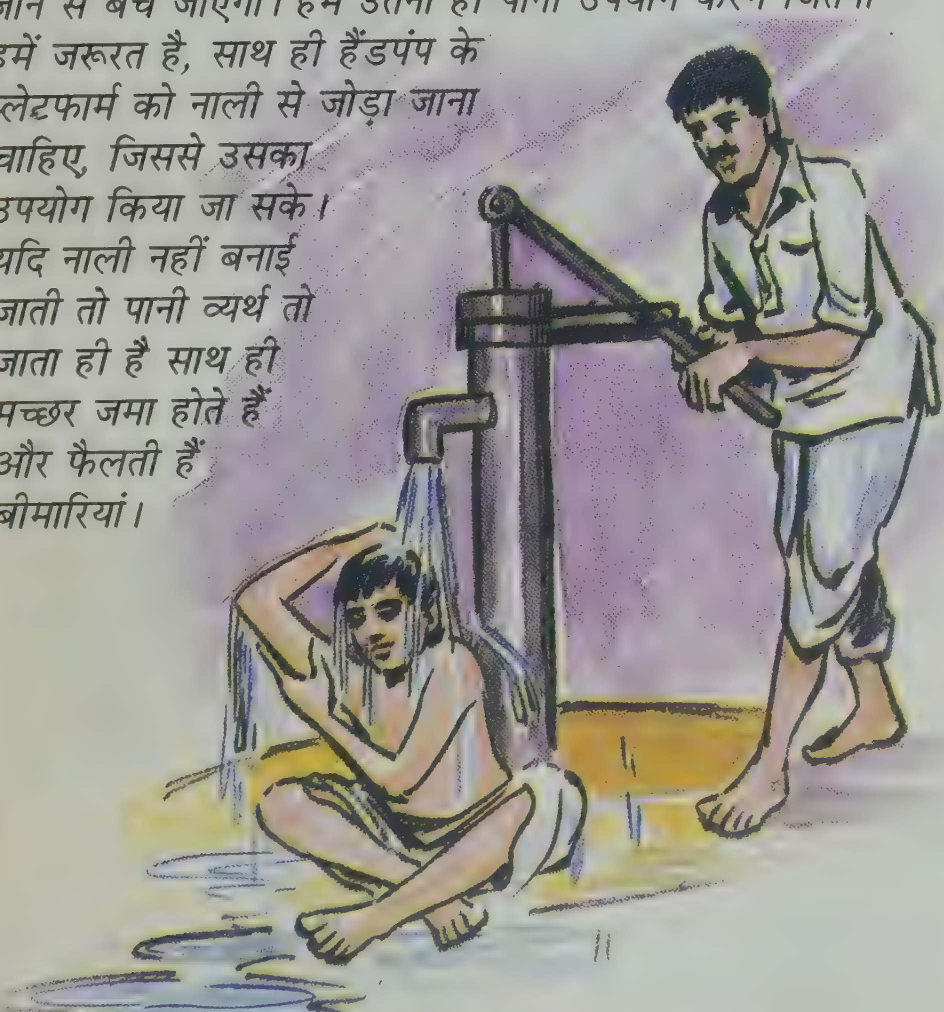


**घरेलू** नौकरानियां अक्सर मेहनत से बचने के लिए घरों में पोंछा लगाने के बजाय सीधे नल में पाइप लगाकर धड़ल्ले से पानी फर्श पर डालती हैं और कमरा धोने के कार्य को आनन-फानन में निबटा देती हैं। इससे बेतहाशा पानी खर्च होता है। खासतौर पर जिन घरों में बोरिंग खुदा हो या चौबीसों घंटे पानी आता हो वहां जरा-जरा सी गंदगी भी पानी की धार के प्रेशर से हटाई जाती है। हमें पानी का यह अपव्यय रोकना चाहिए। केवल एक बाल्टी पानी से पोंछा लगाकर पूरा कमरा साफ किया जा सकता है। इससे सौ-पचास लीटर पानी की बचत तो एक बार में ही की जा सकती है।

**इसी** तरह जब तक वाशिंग मशीन की पूरी क्षमता के जितने गंदे कपड़े न हों तब तक वाशिंग मशीन भी इस्तेमाल नहीं करनी चाहिए। कपड़े चाहे दो-चार धोएं या बीस-पच्चीस, मशीन में पानी एक बार में पूरा ही भरा जाता है। दो-चार कपड़े हों तो हाथ से ही धो लें, काफी पानी बचेगा।



**हैंडपंप** पर हाथ-मुंह धोते समय एक व्यक्ति हैंडपंप को चलाता है व दूसरा हाथ से पानी अपने मुंह पर या शरीर पर डालता है इस बीच भी हैंडपंप चलता रहता है, पानी बहता रहता है। सीधे हैंडपंप से इस तरह पानी लेने में काफी पानी बेकार बह जाता है। यदि हैंडपंप का पानी पहले बाल्टी या किसी बर्तन में भर लिया जाए और उसे मग से काम में लें तो काफी पानी व्यर्थ जाने से बच जाएगा। हम उतना ही पानी उपयोग करेंगे जितनी हमें जरूरत है, साथ ही हैंडपंप के प्लेटफार्म को नाली से जोड़ा जाना चाहिए, जिससे उसका उपयोग किया जा सके। यदि नाली नहीं बनाई जाती तो पानी व्यर्थ तो जाता ही है साथ ही मच्छर जमा होते हैं और फैलती हैं बीमारियां।



# अकाल का सांप




रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून...

# खुशहाली की सीढ़ी




क ऑफ कॉमर्स

...पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून ॥

**जिन** इलाकों में पानी की किल्लत पाई जाती है वहां नलों में पानी ऊपरी मंजिल तक नहीं पहुंचता। ऐसे में सामान्यत: नीचे हौज बनाकर उसमें नल का पानी इकट्ठा किया जाता है और फिर पंप के माध्यम से ऊपर चढ़ाया जाता है, लेकिन कई लोग इतना धैर्य नहीं रखते। सीधे ही मोटर को नल से जोड़ देते हैं। इससे पानी तो ऊपर जल्दी चढ़ जाता है, लेकिन हमारी मोटर पड़ोसी के हिस्से का पानी भी खींच लेती है और हमारे घर से आगे वाले घरों में पानी का दबाव काफी कम हो जाता है। ज्यादा पानी लेने के स्वार्थ में अंधे होकर हम पास-पड़ोस व मोहल्ले की चिंता करना बंद कर देते हैं, लेकिन जब हमारा पड़ोसी ऐसा करता है और हमारे घर पर पानी के दबाव में कमी आती है तो हम झल्ला उठते हैं। कभी-कभी इस बात को लेकर लड़ाई-झगड़े भी हो जाते हैं, इसलिए नल को सीधे मोटर से कभी न जोड़ें यह अनैतिक भी है और गैर-कानूनी भी।





**पानी** को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने वाली पाइन लाइनें चाहे वे छोटी हों या बड़ी, हमेशा से ही उपेक्षा की शिकार रही हैं। अपने स्वार्थ के पीछे अंधे लोग रास्ते में ही पाइप लाइन में छेद करके पानी लेना शुरू कर देते हैं। नतीजा यह होता है कि 10 मिनट में दो घड़े पानी भरने के पीछे चौबीसों घंटे सैंकड़ों घड़े पानी हम व्यर्थ बह जाने का इंतजाम कर देते हैं। इसी तरह सरकारी विभाग भी सर्विस लाइनों के बारे में ज्यादा चौकस नहीं रहते। पाइप लाइनों में लीकेज की मरम्मत तो महीनों बाद जाकर होती है। सड़क के नीचे पाइप लाइन टूटने पर सड़क पर पानी भर जाता है। हम उस पानी में से होकर निकल जाते हैं, परंतु जलदाय विभाग को सूचना तक नहीं करते। एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हमें ऐसे लीकेज को रोकने के लिए प्रयास करना चाहिए। जलदाय विभाग भी अपने टेलीफोन नंबर ज्यादा प्रचारित नहीं करता जिससे कि लोग पाइन लाइन लीकेज या टूटने की सूचना वहां दे सकें। सरकार और जनता दोनों को इस जिम्मेदारी को साझा तौर पर निभाना चाहिए ताकि पानी यूं ही न बहता रहे, किसी के तो काम आए।



**फालतू** बहकर जाने वाला बारिश का पानी रोक कर इकट्ठा करना संभावित सूखे से लड़ने की कारगर रणनीति है। बादल हमें देते हैं एकदम शुद्ध पानी पर यही पानी कीचड़ में बदल जाता है, सड़कें काटता है, गड्ढों में भरकर मच्छर पैदा करता है या फिर यूं ही बहकर चला जाता है किसी नाले में।

यदि इसी पानी को हम अपनी छत पर टांका बनाकर जमा कर लें या फिर छत पर ढलान बनाकर एक पाइप क जरिये जमीन में उतारकर भू-जल स्रोत को री-चार्ज कर लें तो पानी का संकट एक हद तक कम हो जाता है। हम सब अपने मकान में टांके बनाकर या तो बारिश का पानी जमाकर सकते हैं या फिर सीधे जमीन में उतार सकते हैं। घर में जमा पानी को लाल दवा या फिटकड़ी से साफ भी किया जा सकता है। राजस्थान के शेखावाटी इलाके में तो →

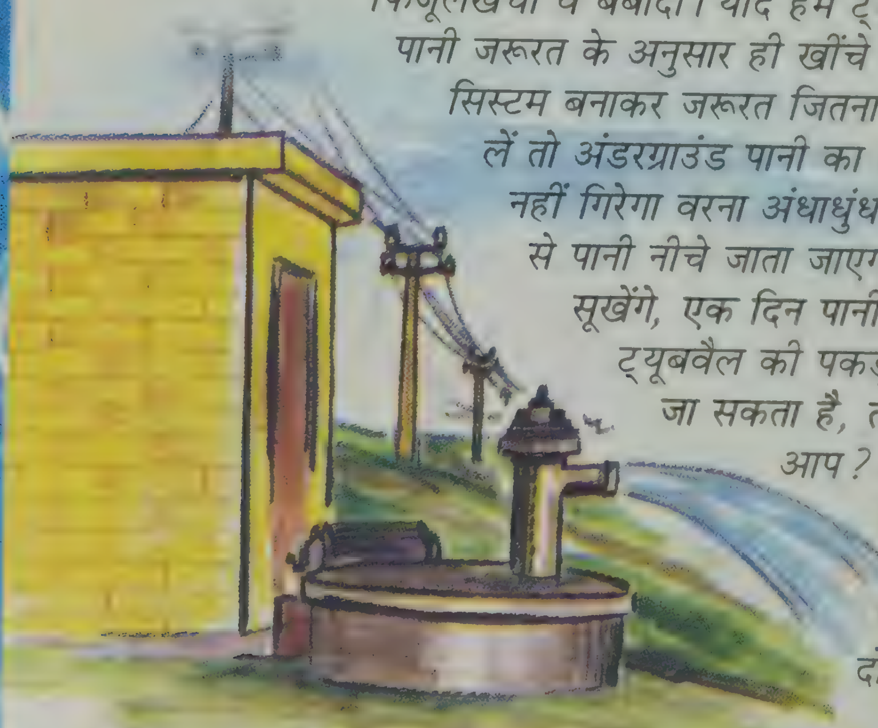


पुरानी हवेलियों में छतों पर बने टांके इसके आदर्श उदाहरण हैं, जिनमें पानी को छानकर भरने तक की व्यवस्था की जाती रही है। यह ऐसा उपाय है जो हर व्यक्ति अपने मकान में अपने स्तर पर कर सकता है और काफी समय तक पानी की कमी से बच सकता है।



बड़े शहरों में जहां बहुमंजिला इमारतें और बड़े-बड़े परिसर हैं वहां छत का क्षेत्रफल काफी ज्यादा होता है। इन जगहों पर निश्चित तौर पर छत के पानी को जमा करने और जमीन में उतार कर भू-जल स्रोतों को री-चार्ज करने की व्यवस्था की जानी चाहिए। कई प्रदेशों में सरकारें भवन निर्माण के साथ ही वर्षा के जल को इकट्ठा करने की व्यवस्था अनिवार्य करने जा रही हैं। इससे हर मकान में टांका बनाना अनिवार्य हो जाएगा।

**मकान** बनवाते समय बोरिंग करवा कर जेट पंप लगाना न केवल सुविधाजनक माना जाता है बल्कि यह एक तरह से स्टेट्स सिंबल जैसा भी माना जाने लगा है। बोरिंग का अर्थ है पानी के उपयोग में स्वेच्छाचारिता की आजादी। भू-जल का दोहन हम इस तरह करते हैं जैसे अपने पट्टे की खान से खनिज निकाल रहे हों। जहां आधा इंच का पाइप चलना चाहिए वहां पूरी तीन इंची धार से काम चलाया जाता है। दरअसल इस पानी का बिल नहीं आता, इसलिए कोई फिक्रमंद नहीं होता, लेकिन हम केवल अपनी जमीन के नीचे का ही पानी काम में नहीं लेते, आसपास के प्लाट का पानी भी हमारा पंप खींच लेता है। हम समाज की संपत्ति का निजी उपयोग के लिए दोहन करते हैं और फिर करते हैं उसकी फिजूलखर्ची व बर्बादी। यदि हम ट्यूबवैल का पानी जरूरत के अनुसार ही खींचे व बाकायदा सिस्टम बनाकर जरूरत जितना ही काम में लें तो अंडरग्राउंड पानी का स्तर ज्यादा नहीं गिरेगा वरना अंधाधुंध जल दोहन से पानी नीचे जाता जाएगा और कुएं सूखेंगे, एक दिन पानी आपके ट्यूबवैल की पकड़ से भी नीचे जा सकता है, तब क्या करेंगे आप? अभी से सोचिए व संयम से पानी का दोहन कीजिए।



पानी बचाओ आंदोलन

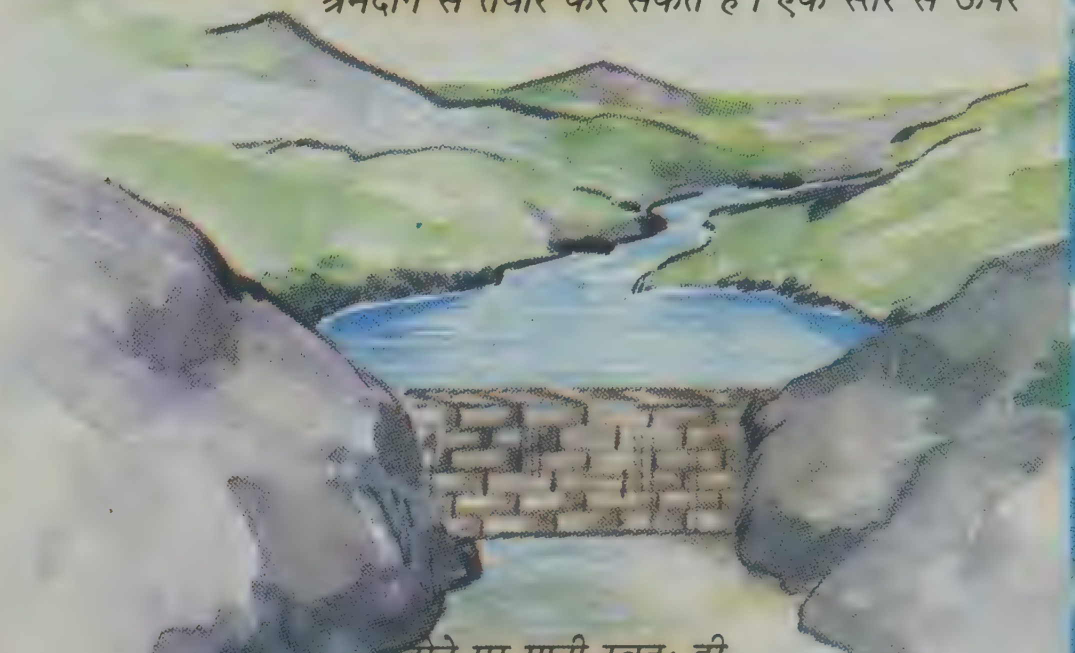
हम जब खेतों को पानी देते हैं तब वास्तव में समूची जमीन को पानी देते हैं, जबकि कई फसलें खासकर फल-फूल वाले पेड़-पौधों में पानी की जरूरत होती है केवल जड़ को। यानी सिंचाई में 70 फीसदी तक पानी व्यर्थ चला जाता है, केवल 30 फीसदी पानी ही काम आता है। कई प्रगतिशील किसान फव्वारा सिंचाई पद्धति काम में लेते हैं, पर कुछ मामलों में उसमें भी पानी की बर्बादी होती है। बूंद-बूंद सिंचाई की पद्धति ऐसे मामलों में ज्यादा कारगर होती है, जहां सर्वे करके पेड़ों की जड़ों के बीच रबड़ की पाइप लाइनें बिछा दी जाती हैं। जहां पेड़ों की जड़ें होती हैं वहां खोलने व बंद किए जा सकने वाले छेद होते हैं जिनसे बूंद-बूंद पानी टपकता है। इससे सीधे जड़ों को पानी मिलता है, कम पानी से जमीन ठोस नहीं होती तो प्रकाश व हवा (ऑक्सीजन) भी भीतर जड़ों तक पर्याप्त मात्रा में पहुंच जाती है। इससे फसल भी अच्छी होती है व पानी भी बचाया जा सकता है। रासायनिक खाद का उपयोग भी इन्हीं नलियों के माध्यम से करने पर खाद भी बचती है और जमीन भी खराब नहीं होती।



**टांकों** का निर्माण अपने घरों में, मोहल्ले के किसी स्थान पर व पहाड़ पर भी किया जा सकता है। राजस्थान के कई गांवों में पहाड़ पर टांके बनाकर लोगों ने अपने व पशुओं के लिए वर्षभर के पानी का इंतजाम किया है। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में जहां का मुख्य व्यवसाय पशुपालन है वहां के ग्रामीण वर्ष में करीब 8 माह का समय पहाड़ पर व्यतीत करते हैं। पहाड़ पर या तो गड्ढे वगैरह बने होते हैं व उनमें वर्षा का पानी एकत्रित हो जाता है। उसी पानी से पशु व वहां के लोग काम चलाते हैं, परंतु अक्सर इनमें पानी का संग्रहण कम हो पाता है व पानी बहता अधिक है, साथ ही गड्ढे का पानी पीने से वहां के लोग बीमार भी अधिक होते हैं। यदि पहाड़ पर व्यवस्थित तरीके से टांका बना लिया जाए तो पानी और स्वास्थ्य दोनों की बर्बादी बच सकती है। जिन गांवों के लोगों ने इस तरह के प्रयोग किए हैं वहां पर सफलता भी मिली है। इसके लिए पहाड़ पर पानी के बहाव वाले क्षेत्र को तलाशकर पक्का टांका बनाना चाहिए। टांके के ऊपर पानी पीने के लिए जो पक्का चबूतरा बनाया जाए उसमें एक मोरी होनी चाहिए जो चबूतरे के बाहर बनी एक टंकी में जानी चाहिए, क्योंकि गांवों में व्यक्ति बाल्टी से पानी खींचते है और ओक से पानी पीते हैं जिससे काफी पानी बहता है, इसलिए उस बहने वाले पानी को टंकी में एकत्रित किया जाना चाहिए जिसका उपयोग पशुओं के पीने के लिए हो।



**भारत** में वर्षा का लगभग 70 प्रतिशत पानी व्यर्थ ही बहकर चला जाता है। यदि छोटे-छोटे एनीकट या जोहड़ बनाकर हम बरसाती नालों को रोकें, पहाड़ों से आने वाले पानी को इकट्ठा करें और छोटी नदियों को बांध सकें तो न केवल पानी जमा होकर हमें उपलब्ध रहेगा वरन यह पानी गांव के कुओं, हैंडपंप व नलकूपों में भी ऊंचा जलस्तर बनाए रखेगा। पानी निकाले जाने पर इन्हें रीचार्ज कर सकेगा। ऐसा पानी जहां जमा होता है वहां स्वत: ही हरियाली हो जाती है और पेड़-पौधे आगे चलकर बादलों को आकर्षित करते हैं। बड़े-बड़े बांधों में काफी पैसा खर्च होता है, बनने में कई वर्ष लगते हैं और भूकंप की आशंका के मद्देनजर उन्हें बनाना कई जगह खतरे से खाली नहीं है। छोटी-छोटी किंतु मजबूत दीवारें गांव के लोग श्रमदान से तैयार कर सकते हैं। एक स्तर से ऊपर



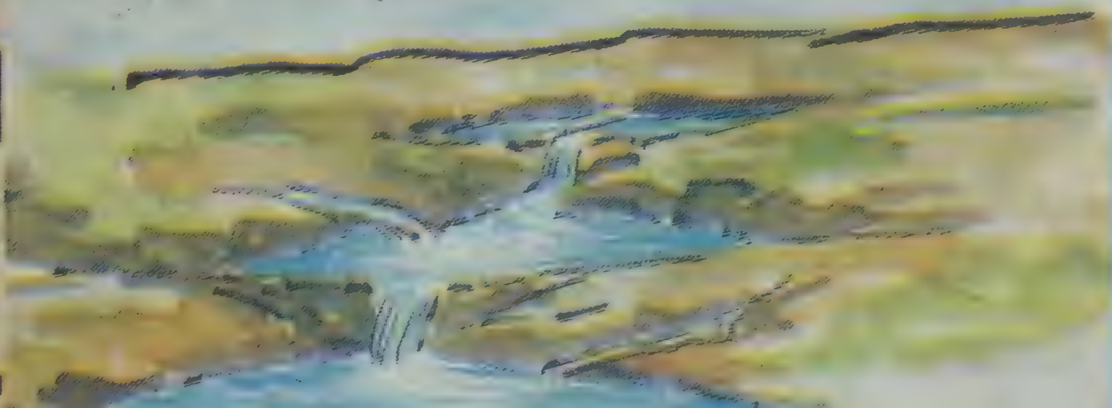
होने पर पानी स्वत: ही बहकर आगे चल देता है इससे आगे के नदी-नाले भी बहते रहते हैं। सामान्य तौर पर गांवों में एनीकट एवं जोहड़ों के निर्माण के समय पानी के परंपरागत रास्तों को तलाशना चाहिए। गांव के बुजुर्ग ऐसे रास्तों को आसानी से बता सकते हैं।

**पानी** सिर्फ जमीन के ऊपर ही नहीं बहता, जमीन के भीतर भी अनेक धाराएं बहती हैं। कहते हैं सरस्वती नदी तो पूरी धरती के भीतर ही भीतर बहती है। जिस तरह हम धरती पर बहकर जा रहे पानी को रोकने की कोशिश करते हैं उसी तरह धरती के भीतर बह रहे पानी को भी रोकने का उपाय किया जा सकता है। जल संग्रहण की इस विधि को भू-सतीय बंध बनाना कहते हैं। इसके तहत जमीन के भीतर बहने वाली धारा को भीतर ही भीतर दीवार खींच कर रोका जाता है ताकि पानी बहकर न जाए और इकट्ठा होने के बाद उस इलाके के कुओं, नलकूपों व हैंडपंपों को रीचार्ज करे। इस तरह संग्रहित किया गया पानी लंबे समय तक काम आ सकता है, क्योंकि जमीन के भीतर होने से उसका वाष्पीकरण नहीं होता। भू-सतीय बंध की विशेषता यह होती है कि धरती के ऊपर बहने वाली जलधारा अविरल बहती रहती है फिर भी नीचे बंधा बांध पानी रोककर लंबे समय तक आसपास के खेतों को नमी देता रहता है। पेड़-पौधों को तर करता रहता है। सतह के भीतर पानी जमा होने से कई बार वाटर लोगिंग की समस्या जरूर आती है पर ऐसा वहां होता है जहां जमीन में नीचे कठोर चट्टान होती है और पानी अधिक नीचे नहीं जा सकता। वाटर लोगिंग से भूमि दलदल हो जाती है और जमीन व पानी, दोनों की हानि होती है। इसके लिए दलदल सुखाने के उपाय समय-समय पर करते रहने चाहिए, जिससे पानी व्यर्थ न जाए।



**बरसात** का जल संग्रह करने का एक प्राचीन तरीका 15वीं सदी में जैसलमेर के पालीवालों ने अपनाया जो आज भी खड़ीन के रूप में प्रचलित है। जहां औसत वार्षिक बरसात 40 मिमी से भी कम है। वहां भी खड़ीन कृषि उत्पादन का नायाब साधन है।

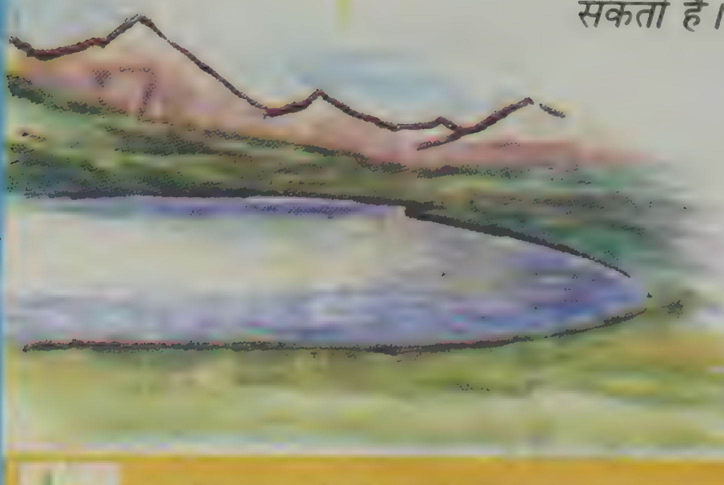
खड़ीनें उस घाटी में निर्मित होती हैं जहां ढाल पर होने से पानी बहकर इकट्ठा होने लगता है। घाटी के अंतिम सिरे पर मिट्टी का बांध बांधा जाता है जो बहते जल को रोक ले। यहां संग्रहित पानी फसल के काम आने के अलावा भू-गर्भ में दबे जल को रीचार्ज करने के भी काम आता है। खड़ीन में बांध के किनारे पत्थर की पक्की रपट बनाई जा सकती है, ताकि लबालब भर जाने पर अतिरिक्त जल का खड़ीन के बाहर बहाव हो सके। खड़ीन के तले में भी एक निर्गम नली की व्यवस्था रहती है जो तली में जमा पानी को बहाकर फसल उगाने के लिए भूमि तैयार कर सके। बड़ी खड़ीनों के बाहर कुएं खोदकर मीठा पानी उपलब्ध कराया जा सकता है और इससे खड़ीन जल की लवणीयता घट जाती है।



**विज्ञान** के विकास के साथ-साथ कई नई तकनीकें जन्म ले रही हैं। झीलों और तालाबों में बहुत सारा पानी तेज गर्मी पड़ने पर भाप बनकर उड़ जाता है। जल के इस वाष्पीकरण को रोकने के लिए पानी की सतह पर एक तैलीय रसायन डाल दिया जाता है जो पानी को ऊपर से ढंक लेता है। सूर्य की तेज किरणों और जल के बीच यह रसायन एक दीवार का काम करता है और वाष्पीकरण की प्रक्रिया काफी हद तक मंद पड़ जाती है। इससे पानी ज्यादा समय तक झील या तालाब में बना रहता है और गांव के हैंडपंप, नलकूप व कुओं को रीचार्ज करता रहता है।

इसी तरह एक खास प्रकार की जैली को पौधों के आसपास छिड़कने से हफ्ते-हफ्ते भर तक पानी छिड़कने की जरूरत नहीं पड़ती है। इस तरह से भी घरों में पानी की बचत की जा सकती है।





**गर्मियों** में सूख जाते हैं तालाब, बांध और झीलें। जब तल दिखाई देता है तो गेज देखकर पता चलता है कि तालाब में कई फुट मिट्टी भरी है। वर्षा के जल के साथ बहकर आने वाली यह मिट्टी साल दर साल बांध, झील या तालाब के पेंदे में जमा होकर उसकी भराव क्षमता को चौथाई या आधा तक कम कर देती है। अपने गांव, कस्बे या शहर के सूखे हुए जल स्रोतों की मिट्टी खोदकर बाहर निकालिए और उसकी मूल जलभरण क्षमता को बहाल कीजिए, ताकि अबके बरस सावन में जब घटाएं बरसें तो ज्यादा पानी जमा हो और अगली गर्मी में वह जल स्रोत नहीं सूखे। इससे आसपास के कुएं, नलकूप व हैंडपंप में भी पानी ज्यादा व जल्दी आएगा। मिट्टी हटाने (डिसिल्टिंग) का काम स्थानीय निकायों व स्वयंसेवी संस्थाओं को नागरिकों के श्रमदान के माध्यम से कराना चाहिए।



 आज जितना पसीना बहाएंगे, कल उससे ज्यादा पानी पाएंगे।

**कई** उद्योगों में संयंत्रों का तापमान कम करने के लिए ही पानी का इस्तेमाल होता है। ऐसे पानी का कई बार उपयोग किया जा सकता है। कई बार संयंत्रों में उपयोग के बाद जल प्रदूषित हो जाता है और उद्योग उसे यूं ही नालों में बहा देते हैं। यह पानी आसपास की नदी या नाले में जाकर पूरे जल को प्रदूषित कर देता है। इससे जहां पीने लायक पानी होता है, वह भी पीने लायक नहीं रहता। इसके लिए जरूरी है कि उद्योग खुद अपना ट्रीटमेंट प्लांट लगाएं और ऐसे पानी को पुनःचक्रित करके काम में लें। पेड़-पौधों के लिए, वाहन व मशीनें साफ करने के लिए तथा दूसरे कई ऐसे कामों के लिए स्वच्छ किए गए पानी को काम में लिया जा सकता है।



पानी बचाओ आंदोलन
दैनिक भास्कर

## पानी का अपव्यय और संभावित बचत

| कार्य | पानी का व्यय | बचत के लिए सुझाव |
|---|---|---|
| नल खुला रखकर मंजन करना | एक बार में 10 लीटर | मग में पानी भरकर मंजन करें तो 1 लीटर |
| नल खुला रखकर हाथ धोना | 7 लीटर | हाथों में साबुन लगाने के बाद नल चालू करें और फिर हाथ धोकर एक चुल्लु पानी से नल पर लगे साबुन को धो दें। कुल व्यय **आधा** लीटर से **एक** लीटर। |
| नल खोलकर नहाना | कम से कम 25 लीटर | बाल्टी में पानी भरकर नहाएं तो आधे से कम 18 लीटर |
| नल द्वारा वाहन धोना | कम से कम 25 लीटर | गीले कपड़े से पौंछें तो एक बाल्टी (12 लीटर पर्याप्त) |
| फर्श की सफाई | पाइप से धोने पर 50 लीटर (15×10 फुट के फर्श पर) | पहले झाड़ू लगाकर फिर बाल्टी में पानी भरकर पौंछा लगाएं तो 10 लीटर |
| फ्लश करने में | 20 लीटर प्रति व्यक्ति | बाल्टी के इस्तेमाल से 5 से 8 लीटर |
| शेव बनाना | नल खुला रखकर 10 लीटर | मग का इस्तेमाल करें तो 1 लीटर |



ओ-बी-सी-

# पैसा मिल सकता है उधार लेकिन पानी नहीं !



भविष्य के लिए
आप बचाते हैं पैसा
जमा कराते हैं हमारे पास,
हम देते हैं जरूरतमंदों को
पैसा उधार

लेकिन अफसोस!
हम नहीं दे सकते पानी उधार

भविष्य के लिए
आप बचाइए पानी
जमा कीजिए धरती मां के पास

जरूरत पड़ने पर वह
देगी उपहार, अपना प्यार-दुलार,
एक हरा-भरा संसार !

ओ·बी·सी·

**ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स**
(भारत सरकार का उपक्रम)

*ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स द्वारा जनहित में प्रसारित*